WISDOM IAS

WISDOM IAS

साप्ताहिक
समसामायिकी

UPSC, PCS और अन्य परीक्षाओं के लिए
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

11 FEB - 16 FEB, 2025

रक्षा सहयोग और F-35 लड़ाकू विमान बिक्री

भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक
भारत का फार्मास्युटिकल निर्यात
चीन की बांध परियोजना
ला नीना और वैश्विक तापमान वृद्धि

1. भारत का फार्मास्युटिकल निर्यात

समाचार: भारत का फार्मास्युटिकल निर्यात 2047 तक $350 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो वर्तमान स्तर से 10-15 गुना वृद्धि होगी।

भारत की फार्मास्युटिकल उद्योग के बारे में

- यह वैश्विक स्तर पर 'दुनिया की फार्मेसी' के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है, विशेष रूप से COVID-19 महामारी और उसके बाद टीकों, आवश्यक दवाओं और चिकित्सा आपूर्ति की आपूर्ति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए।
- इस क्षेत्र ने अपनी नवाचार क्षमताओं का प्रदर्शन किया है और खुद को वैश्विक फार्मास्युटिकल मूल्य श्रृंखला के एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में स्थापित किया है।

वैश्विक बाजार में वर्तमान स्थिति:

- भारत विश्व स्तर पर जेनरिक दवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है, जो वैश्विक बिक्री का 20% हिस्सा रखता है।
- दवा और फार्मास्युटिकल उत्पादन में भारत मात्रा के हिसाब से वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर है।
- भारत लगभग 200 देशों और क्षेत्रों को दवाओं का निर्यात करता है।
- इन निर्यातों के लिए शीर्ष पांच गंतव्य अमेरिका, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, यूके और ब्राज़ील हैं।
- फार्मास्युटिकल निर्यात मूल्य में भारत 11वें स्थान पर है, और वित्तीय वर्ष 2024 में कुल वार्षिक टर्नओवर ₹4.17 लाख करोड़ रहा, जो पिछले पांच वर्षों में 10.1% की औसत दर से बढ़ा है।"

निर्यात अनुमान

- भारत के फार्मास्युटिकल निर्यात के 2023 में $27 अरब से बढ़कर 2030 तक $65 अरब तक पहुंचने की उम्मीद है।
- मात्रा-आधारित वृद्धि से मूल्य-आधारित वृद्धि की ओर बदलाव भारत के फार्मास्युटिकल क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है।
- वृद्धि के प्रमुख क्षेत्र एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट्स (APIs), बायोसिमिलर्स और विशेष जेनरिक दवाएं हैं।
- API बाजार वृद्धि:
- भारत के API निर्यात के 2023 में $5 अरब से बढ़कर 2047 तक $80-90 अरब तक पहुंचने का अनुमान है।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में विविधता, विशेष रूप से अमेरिका के बायोसिक्योर एक्ट के कारण, API उत्पादन को मजबूत करने का अवसर प्रदान करती है।
- बायोसिमिलर्स बाजार वृद्धि:
- वर्तमान में $0.8 अरब के भारतीय बायोसिमिलर निर्यात के 2030 तक पांच गुना बढ़कर $4.2 अरब और 2047 तक $30-35 अरब तक पहुंचने की संभावना है।
- R&D में वृद्धि, विनियामक सरलीकरण और क्षमता विस्तार इस वृद्धि को समर्थन देंगे।
- बायोसिमिलर्स वे दवाएं हैं जो जैविक दवाओं के समान होती हैं और जीवित प्रणालियों जैसे कि यीस्ट, बैक्टीरिया या पशु कोशिकाओं के माध्यम से बनाई जाती हैं।
- जेनरिक फॉर्मुलेशन वृद्धि:
- जेनरिक फॉर्मुलेशन भारत के फार्मास्युटिकल निर्यात का 70% हिस्सा रखते हैं, जिसकी वर्तमान मूल्य $19 अरब है।
- यह 2047 तक $180-190 अरब तक बढ़ने की संभावना है, जिसमें उच्च-लाभ वाली विशेष जेनरिक दवाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

नीति और रणनीतिक उपाय

- भारत सरकार ने फार्मास्युटिकल क्षेत्र को बढ़ावा देने और निवेश को बढ़ाने के लिए कई पहलें लागू की हैं।
- सितंबर 2020 में, सरकार ने आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत फार्मास्युटिकल क्षेत्र के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (PLI) योजना शुरू की, जिसमें 15,000 करोड़ रुपये का वित्तीय परिव्यय है, और इस योजना की अवधि 2020-2021 से लेकर 2028-29 तक है।
- अब, लक्षित नीति उपायों की आवश्यकता है, जिसमें API उद्योग को मजबूत करना, निर्यात में रुकावटों को दूर करना, और देश-विशेष निर्यात रणनीतियां स्थापित करना शामिल है।
- भारत UNICEF के वैक्सीन्स का 55-60% आपूर्ति करता है, लेकिन अब उसे उच्च-मूल्य वाले बाजारों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा, इसके लिए क्लिनिकल ट्रायल्स और निर्माण निवेश की आवश्यकता है।
- विनियामक सामंजस्य, प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव्स (PLI) का विस्तार और R&D इंसेंटिव्स महत्वपूर्ण सहायक कारक होंगे।

चुनौतियाँ

- भारत कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें बौद्धिक संपदा अधिकारों, अनुसंधान और विकास की कमी आदि को संबोधित करना शामिल है।
- राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकीय, पर्यावरणीय और कानूनी तत्वों को समझना भारतीय फार्मास्युटिकल बाजार में अवसरों और चुनौतियों का मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष और आगे का मार्ग

- भारत पहले ही जनरिक दवाओं की आपूर्ति में वैश्विक नेता है और वह विशेष जनरिक, बायोसिमिलर और नवोन्मेषी उत्पादों के साथ मूल्य श्रेणी में ऊपर उठने का लक्ष्य रखता है।
- यह परिवर्तन भारत को 2047 तक निर्यात मूल्य में शीर्ष पांच देशों में स्थान पाने में मदद कर सकता है।
- भारत ने "दुनिया का स्वास्थ्य देखभाल संरक्षक" बनने का लक्ष्य रखा है, जिसमें नवाचार, अनुसंधान और विकास, और विनियामक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। और अकादमिक, उद्योग और सरकार के बीच सहयोग वैश्विक प्रतिस्पर्धी फार्मास्युटिकल क्षेत्र बनाने के लिए कुंजी है।

2. भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी

समाचार:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वाशिंगटन में मुलाकात की, जो भारत-अमेरिका संबंधों में एक महत्वपूर्ण क्षण था।
- उनकी चर्चाओं में रक्षा सहयोग, व्यापार वृद्धि, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी सहयोग शामिल थे।
- कई महत्वपूर्ण समझौते हस्ताक्षरित किए गए, जिससे दुनिया की दो सबसे बड़ी लोकतंत्रों के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया गया।
- दोनों नेताओं ने रक्षा व्यापार को आगे बढ़ाने, महत्वाकांक्षी व्यापार लक्ष्यों को निर्धारित करने और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), अर्धचालक और अंतरिक्ष अन्वेषण जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में सहयोग बढ़ाने का वादा किया।

भारत-अमेरिका के प्रमुख समझौते

रक्षा सहयोग

- अमेरिका भारत को F-35 स्टील्थ फाइटर जेट बेचेगा, जिससे वायु युद्ध क्षमता को बढ़ावा मिलेगा।
- एक नया 10-वर्षीय भारत-अमेरिका प्रमुख रक्षा साझेदारी ढांचा पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।
- भारत छह अतिरिक्त P8I समुद्री निगरानी विमान खरीदेगा।
- संयुक्त रक्षा निर्माण, प्रौद्योगिकी साझाकरण और ITAR समीक्षा रक्षा व्यापार को सरल बनाएंगे।
- अमेरिका और भारत ASIA के तहत स्वायत्त रक्षा प्रौद्योगिकियों पर सहयोग करेंगे।

26/11 के आरोपी तहव्वुर राना की प्रत्यर्पण

- अमेरिका ने 2008 मुंबई हमलों में राना की भूमिका के लिए उसका प्रत्यर्पण सुनिश्चित किया।
- यह कदम भारत-अमेरिका आतंकवाद विरोधी सहयोग को मजबूत करता है।

व्यापार विस्तार ('मिशन 500')

- 2030 तक $500 बिलियन वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य।
- 2025 के पतझड़ तक एक नया द्विपक्षीय व्यापार समझौता (BTA) पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।
- अमेरिका में भारतीय निवेशों ने 3,000 से अधिक नौकरियां सृजित की हैं।
- दोनों देश व्यापार बाधाओं और आपसी शुल्कों को हल करेंगे।
- ऊर्जा और परमाणु सहयोग
- भारत अमेरिका से तेल और गैस आयात बढ़ाएगा, जिससे व्यापार संतुलन में सुधार होगा।
- अमेरिका भारत के अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) सदस्यता का समर्थन करेगा।
- यूएस-भारत 123 नागरिक परमाणु समझौते का पूर्ण कार्यान्वयन, जिसमें परमाणु रिएक्टर निर्माण और मॉड्यूलर रिएक्टर सहयोग शामिल है।

शिक्षा और लोगों के बीच संबंध

- 300,000 से अधिक भारतीय छात्र प्रत्येक वर्ष अमेरिका की अर्थव्यवस्था में $8 बिलियन का योगदान करते हैं।
- संयुक्त डिग्री कार्यक्रम, छात्र विनिमय, और अमेरिका विश्वविद्यालयों के ऑफशोर परिसरों की योजना बनाई गई है।
- व्यावसायिकों और छात्रों के लिए वीजा प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाएगा।

प्रौद्योगिकी और नवाचार

- महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के लिए यूएस-भारत TRUST पहल की शुरुआत।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), अर्धचालक और अंतरिक्ष में INDUS नवाचार का विस्तार।
- क्वांटम कंप्यूटिंग, जैव प्रौद्योगिकी और रणनीतिक खनिजों के एक्सेस पर सहयोग।
- यूएस और भारतीय संस्थानों के बीच MoUs के माध्यम से अनुसंधान साझेदारियां।

बहुपक्षीय और इंडो-पैसिफिक रणनीति

- दोनों नेताओं ने QUAD के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
- प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति ट्रंप को Quad Leaders' Summit के लिए आमंत्रित किया।
- भारतीय महासागर रणनीतिक उद्यम की शुरुआत, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।
- पाकिस्तान से कार्रवाई की मांग करते हुए सीमा पार आतंकवाद की संयुक्त निंदा।

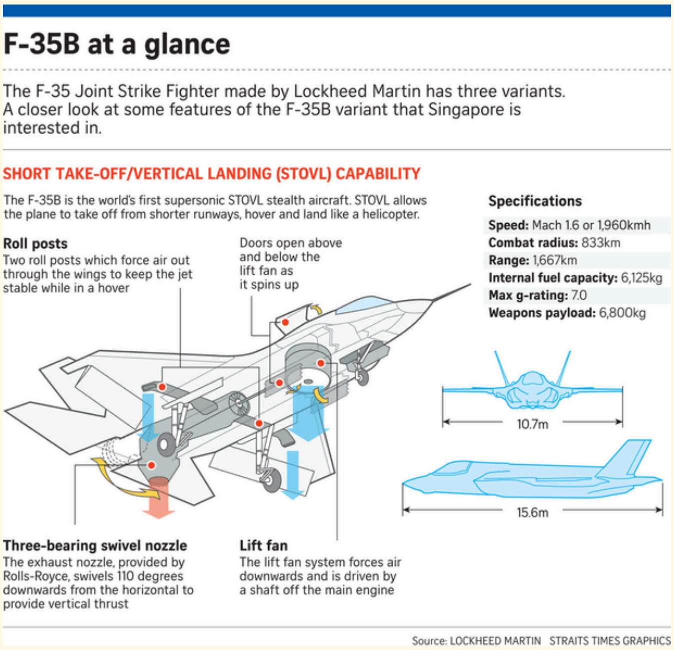

भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी का महत्व

- रक्षा संबंधों को मजबूत करना: F-35 जेट्स की बिक्री और सह-निर्माण समझौते भारत की सुरक्षा को बढ़ावा देंगे।
- व्यापार और निवेश में वृद्धि: 'मिशन 500' अगले दशक के लिए एक साहसिक व्यापार लक्ष्य निर्धारित करता है।
- ऊर्जा सुरक्षा: बढ़े हुए तेल और गैस आयात और परमाणु सहयोग से भारत की ऊर्जा स्थिरता में सुधार होगा।
- प्रौद्योगिकी नेतृत्व: AI, क्वांटम कंप्यूटिंग और अर्धचालक पहलों से भारत की तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिलेगा।
- वैश्विक रणनीतिक प्रभाव: अमेरिका के साथ भारत की साझेदारी इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में इसकी स्थिति को मजबूत करती है।

निष्कर्ष

- भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी लगातार बढ़ रही है, जिसमें रक्षा, व्यापार, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी के प्रमुख समझौते हुए हैं।
- दोनों देश आर्थिक सहयोग, आतंकवाद विरोधी प्रयासों और वैश्विक शांति पहलों को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- जैसे-जैसे भारत और अमेरिका अपनी साझेदारी को और गहरा करते हैं, वे आने वाले वर्षों में एक मजबूत और अधिक लचीली साझेदारी के लिए मंच तैयार कर रहे हैं।

3. नीति आयोग रिपोर्ट: राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय

समाचार: नीति आयोग ने 'राज्य और राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का विस्तार' शीर्षक से एक नीति रिपोर्ट जारी की।

रिपोर्ट के बारे में

- यह रिपोर्ट उच्च शिक्षा क्षेत्र में पहली बार प्रकाशित होने वाला एक नीति दस्तावेज है, जो विशेष रूप से राज्यों और राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों (SPUs) पर केंद्रित है।
- राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय (SPU) एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिसे प्रांतीय अधिनियम या राज्य अधिनियम द्वारा स्थापित या निगमित किया गया हो, उसे राज्य (सार्वजनिक) विश्वविद्यालय कहा जा सकता है।
- यह रिपोर्ट पिछले दशक के दौरान गुणवत्ता, वित्तपोषण और फाइनेंसिंग, प्रशासन और रोजगार क्षमता के महत्वपूर्ण संकेतकों पर विस्तृत मात्रात्मक विश्लेषण प्रदान करती है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

- सबसे अधिक वित्तपोषण: महाराष्ट्र उच्च शिक्षा के लिए सबसे अधिक वित्तपोषण करता है, इसके बाद बिहार और तमिलनाडु का स्थान है।
- सबसे कम वित्तपोषण: सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और नगालैंड के पास उच्च शिक्षा के लिए सबसे कम बजट है।
- विश्वविद्यालय घनत्व: राष्ट्रीय औसत विश्वविद्यालय घनत्व 0.8 है।
- सिक्किम में 10.3 के साथ सबसे उच्च घनत्व है, इसके बाद अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और उत्तराखंड का स्थान है।
- बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में राज्य स्तर पर घनत्व राष्ट्रीय औसत से कम है।
- महिला नामांकन: केरल, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश में महिला नामांकन दर पुरुषों से अधिक है।

चुनौतियाँ

- अच्छी गुणवत्ता वाली अवसंरचना की कमी।
- संकाय और स्टाफ की कमी।
- अनुसंधान और विकास (R&D) पर अपर्याप्त व्यय।
- एमटेक और पीएचडी स्तर पर छात्रों का कम नामांकन, जो उन्नत अनुसंधान और शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।
- कोर्स, पाठ्यक्रम और सिलेबस उद्योग-तैयार नहीं हैं।
- वित्तपोषण में समस्याएँ: वे पारंपरिक राजस्व स्रोतों जैसे प्रवेश शुल्क और राज्य अनुदान पर निर्भर होने के कारण वित्तीय समस्याओं का सामना करते हैं।

सिफारिशें

- इसने एसपीयू (SPUs) के चार क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न मुद्दों को संबोधित करने के लिए लगभग 80 नीतिगत सिफारिशें प्रस्तुत की हैं: शिक्षा की गुणवत्ता; निधि और वित्तपोषण; शासन; और उनमें नामांकित छात्रों के बीच रोजगार क्षमता।
- एनईपी 2020 में सिफारिश की गई अनुसार, केंद्र और राज्यों द्वारा शिक्षा पर संयुक्त निवेश को जीडीपी के 6% तक बढ़ाना।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 में सुझाए अनुसार, अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) में सार्वजनिक और निजी निवेश को जीडीपी के 2% तक बढ़ाना।
- एसपीयू के समूहों को 2 से 3 स्थानीय मुद्दों की पहचान करनी चाहिए और इन चुनौतियों के समाधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र (Centres of Excellence) स्थापित करने चाहिए।
- राज्य एसपीयू के लिए विशेष रूप से समर्पित, उच्च शिक्षा वित्त एजेंसी (HEFA) के समान एक वित्त एजेंसी स्थापित करने पर विचार कर सकते हैं।
- HEFA केंद्र और केनरा बैंक का एक संयुक्त उपक्रम है, जिसे 2017 में स्थापित किया गया था।
- यह एजेंसी बुनियादी ढांचे और अनुसंधान सुविधाओं को मजबूत करने पर केंद्रित होनी चाहिए।

4. भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2024

समाचार: भारत भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2024 में 180 देशों में से 96वें स्थान पर रहा।

परिचय

भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2024 यह दर्शाता है कि कैसे भ्रष्टाचार वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों में बाधा डाल रहा है।

- सूचकांक 180 देशों और क्षेत्रों को उनके सार्वजनिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के स्तर के आधार पर रैंक करता है।
- यह शून्य से 100 तक के पैमाने का उपयोग करता है, जहां "शून्य" अत्यधिक भ्रष्ट और "100" पूरी तरह स्वच्छ को दर्शाता है।
- यह रिपोर्ट ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा संकलित की गई है।
- भ्रष्टाचार एक विकसित होती वैश्विक चुनौती है, जो न केवल विकास को बाधित करता है बल्कि लोकतंत्र में गिरावट, अस्थिरता और मानवाधिकारों के उल्लंघन का मुख्य कारण भी है।

CPI 2024 की प्रमुख बातें

- दुनिया की 85% आबादी ऐसे देशों में रहती है जिनका CPI स्कोर 50 से कम है।
- भारत ने 100 में से 38 अंक प्राप्त किए, जो 2023 से 1 अंक कम है, और 96वें स्थान पर रहा।
- सबसे कम भ्रष्ट देश: डेनमार्क, फ़िनलैंड, सिंगापुर।
- सबसे अधिक भ्रष्ट देश: दक्षिण सूडान, सोमालिया, वेनेजुएला।

भ्रष्टाचार जलवायु कार्रवाई को कैसे प्रभावित कर रहा है?

- जलवायु नीतियों को कमजोर करता है: भ्रष्टाचार कुछ शक्तिशाली समूहों के हितों को सार्वजनिक हित से ऊपर रखता है, जिससे पर्यावरणीय नीतियां कमजोर होती हैं।
- शासन और कानून प्रवर्तन को कमजोर करता है: खराब शासन और पारदर्शिता की कमी जलवायु निर्णयों में जवाबदेही घटाती है।
- जलवायु निधियों का दुरुपयोग: कई जलवायु-संवेदनशील देशों का CPI स्कोर 50 से कम है, जिससे निधियों के दुरुपयोग का खतरा बढ़ जाता है।
- असमानता को बढ़ाता है: अप्रभावी नीतियों के कारण हाशिए पर रहने वाले समुदाय जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अधिक झेलते हैं।
- बहुपक्षवाद को कमजोर करता है: भ्रष्टाचार जलवायु वार्ताओं को प्रभावित करता है, जिससे जीवाश्म ईंधन लॉबिस्टों को बढ़ावा मिलता है और पारदर्शिता घटती है।

सिफारिशें

- भ्रष्टाचार विरोधी उपायों को मजबूत करें: जलवायु वित्त और नीतियों में सुरक्षा उपाय शामिल करें।
- जलवायु नीति में पारदर्शिता बढ़ाएं: लॉबिंग नियम लागू करें और जलवायु वित्त रिकॉर्ड सार्वजनिक करें।
- जांच और सुरक्षा बढ़ाएं: व्हिसलब्लोअर्स और पर्यावरण कार्यकर्ताओं की रक्षा करें।
- जनभागीदारी को बढ़ावा दें: जलवायु परिवर्तन से प्रभावित समुदायों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करें।

5. मणिपुर अशांति एवं राष्ट्रपति शासन

समाचार: मणिपुर के मुख्यमंत्री के इस्तीफे ने राज्य में राष्ट्रपति शासन की संभावना बढ़ा दी है।

संविधान का अनुच्छेद 356

- अनुच्छेद 356 भारत के राष्ट्रपति को यह अधिकार देता है कि जब किसी राज्य में संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार शासन चलाना संभव न हो, तो वहां राष्ट्रपति शासन लागू किया जा सकता है।
- आमतौर पर, यह राज्यपाल की रिपोर्ट के आधार पर लगाया जाता है, जिसमें राज्य की प्रशासनिक विफलता का उल्लेख होता है।
- राष्ट्रपति द्वारा जारी अधिसूचना के तहत, राज्य सरकार के कार्य केंद्र सरकार को और राज्य विधानसभा की शक्तियां संसद को हस्तांतरित हो जाती हैं।
- न्यायपालिका, विशेष रूप से उच्च न्यायालय, बिना किसी हस्तक्षेप के कार्य करना जारी रखती है।
- यह अधिसूचना दो महीने तक मान्य रहती है, लेकिन इसे आगे बढ़ाने के लिए संसद के दोनों सदनों की मंजूरी आवश्यक होती है।
    - यदि स्वीकृत होता है: राष्ट्रपति शासन छह महीने तक लागू रह सकता है और इसे छह-छह महीने के अंतराल में बढ़ाया जा सकता है, अधिकतम तीन वर्ष तक।

भारत में राष्ट्रपति शासन

- संविधान लागू होने के बाद से, अनुच्छेद 356 को विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 134 बार लागू किया जा चुका है।
- मणिपुर और उत्तर प्रदेश में इसे 10-10 बार लागू किया गया है, जो सबसे अधिक है।
- हालांकि, कुछ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अन्य की तुलना में अधिक समय तक केंद्रीय शासन रहा है।
- जम्मू-कश्मीर और पंजाब जैसे राज्यों में राष्ट्रपति शासन की घटनाएं कम रही होंगी, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता या सुरक्षा चिंताओं के कारण इसकी अवधि अधिक रही।

एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) मामला

- सुप्रीम कोर्ट ने एस. आर. बोम्मई बनाम भारत संघ मामले में अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग पर रोक लगाने के लिए महत्वपूर्ण दिशानिर्देश दिए।
- इस निर्णय में स्पष्ट किया गया कि:
    - राष्ट्रपति का निर्णय न्यायिक समीक्षा के अधीन होगा।
    - यदि राष्ट्रपति शासन गैर-कानूनी, दुर्भावनापूर्ण या अवैध कारणों से लागू किया गया हो, तो न्यायालय इसे रद्द कर सकता है।
    - राज्य की केवल विधानपालिका निलंबित होगी, जबकि कार्यपालिका और अन्य प्रशासनिक अंग तब तक कार्य करते रहेंगे, जब तक कि संसद इसे दो महीने के भीतर मंजूरी न दे दे।

आगे की राह

- राष्ट्रपति शासन, भले ही एक संवैधानिक प्रावधान हो, लेकिन यह भारतीय राजनीति में विवादित मुद्दा बना रहता है।
- मणिपुर की स्थिति में इसके संभावित उपयोग को लेकर जारी बहस यह दर्शाती है कि राज्य सरकारों की स्थिरता और संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है।

मणिपुर अशांति: एक संक्षिप्त अवलोकन

मणिपुर में मुख्य रूप से मैतेई और कुकी समुदायों के बीच जातीय हिंसा जारी है।

कारण

- एसटी दर्जे की मांग – मैतेई समुदाय अनुसूचित जनजाति (ST) का दर्जा चाहता है, जिसका कुकी समुदाय विरोध कर रहा है, क्योंकि उन्हें भूमि अधिकारों के नुकसान का डर है।
- जातीय तनाव – मैतेई (जो घाटी में रहते हैं) और पहाड़ी जनजातियों (कुकी, नागा) के बीच लंबे समय से विभाजन बना हुआ है।
- अवैध प्रवासन और नशीले पदार्थ – अवैध प्रवासियों और पोस्ता की खेती पर कार्रवाई से तनाव बढ़ा।
- राजनीतिक और प्रशासनिक मुद्दे – पक्षपाती शासन और अप्रभावी कानून व्यवस्था के आरोप लगे हैं।

हाल के घटनाक्रम

- हिंसा और विस्थापन – बड़े पैमाने पर झड़पें, आगजनी, और हजारों लोग राहत शिविरों में शरण लेने को मजबूर।
- सुरक्षा उपाय – इंटरनेट बंदी, सैन्य तैनाती, और सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप।
- शांति वार्ता और राजनीतिक प्रभाव – सरकार की आलोचना के बीच समझौते के प्रयास जारी।

प्रभाव और आगे की राह

- मानवीय संकट – विस्थापन, आर्थिक अस्थिरता और जातीय विभाजन गहरा रहा है।
- सामान्य स्थिति की बहाली – संवाद, निष्पक्ष शासन, सुरक्षा को मजबूत करने और आर्थिक सहायता की आवश्यकता।
- मणिपुर में अशांति को समाप्त करने के लिए स्थायी शांति प्रयासों और समावेशी नीतियों की आवश्यकता है।

6. भारत-फ्रांस सहयोग: आईएमईसी परियोजना

समाचार: भारत और फ्रांस ने घोषणा की है कि वे इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप कॉरिडोर (IMEC) परियोजना को लागू करने के लिए मिलकर काम करना जारी रखेंगे।

इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)

भागीदार देश: दिल्ली G20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत, अमेरिका, UAE, सऊदी अरब, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ ने इस गलियारे को स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।

उद्देश्य: यह गलियारा एशिया, पश्चिम एशिया, मध्य पूर्व और यूरोप के बीच बेहतर कनेक्टिविटी और आर्थिक एकीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा।

मुख्य घटक
- यह गलियारा दो अलग-अलग मार्गों से बनेगा:
  a. पूर्वी गलियारा – भारत को पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व से जोड़ेगा।
  b. उत्तरी गलियारा – पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व को यूरोप से जोड़ेगा।
- इस परियोजना के तहत, अरब प्रायद्वीप में एक रेलवे लाइन बनाई जाएगी, जो UAE और सऊदी अरब से होकर गुजरेगी और भारत व यूरोप को समुद्री मार्ग से जोड़ेगी।
- भविष्य में यह गलियारा ऊर्जा परिवहन (पाइपलाइन) और डेटा ट्रांसमिशन (ऑप्टिकल फाइबर लिंक) के लिए भी विकसित किया जा सकता है।

आईएमईसी में शामिल प्रमुख बंदरगाह
- भारत: मुंद्रा (गुजरात), कांडला (गुजरात), और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (नवी मुंबई)।
- यूरोप: पिराएस (ग्रीस), मेसिना (दक्षिणी इटली), और मार्सिले (फ्रांस)।
- मध्य पूर्व: फुजैरा, जेबेल अली, अबू धाबी (UAE), दमाम और रास अल खैर (सऊदी अरब)।
- इज़राइल: हाइफ़ा पोर्ट।

रेलवे लाइन: यह फुजैरा पोर्ट (UAE) से हाइफ़ा पोर्ट (इज़राइल) तक फैलेगी, जो सऊदी अरब (गुवैफात और हरध) और जॉर्डन से होकर गुजरेगी।

आईएमईसी में भारत-फ्रांस साझेदारी
1. यूरोपीय बाजारों तक पहुंच:
   - फ्रांस की रणनीतिक स्थिति भारत के लिए यूरोपीय बाजारों तक एक महत्वपूर्ण द्वार प्रदान करती है, जिससे व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिलेगा।
2. प्रौद्योगिकी सहयोग:
   - फ्रांस की अधोसंरचना, लॉजिस्टिक्स और डिजिटल तकनीकों में विशेषज्ञता IMEC की सफलतापूर्वक स्थापना के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
3. चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का विकल्प:
   - भारत और फ्रांस, दोनों BRI के संभावित प्रभावों को लेकर सतर्क हैं और वे IMEC को एक वैकल्पिक क्षेत्रीय कनेक्टिविटी मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

आईएमईसी के सामने चुनौतियां
- हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य की संवेदनशीलता:
  - IMEC की लगभग पूरी व्यापारिक संरचना हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य से होकर गुजरती है।
  - ईरान की निकटता और जलडमरूमध्य पर उसका प्रभाव इस गलियारे के संचालन में एक बड़ा जोखिम बना सकता है।
- **वित्तीय व्यवहार्यता:**
  - इस विस्तृत परियोजना के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन सुनिश्चित करना आवश्यक है।
  - निवेशकों को आकर्षित करने के लिए एक स्पष्ट और मजबूत वित्तीय मॉडल की आवश्यकता होगी।
- **भू-राजनीतिक संवेदनशीलता:**
  - इस परियोजना में कई हितधारक शामिल हैं, जिनके विभिन्न हित और प्राथमिकताएँ हैं।
  - इन जटिलताओं को सुलझाना और सभी पक्षों के बीच सहमति सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा।

आगे की राह
- भारत और फ्रांस इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने में समान हित रखते हैं, जिससे वे इस पहल में स्वाभाविक भागीदार बनते हैं।
- भू-राजनीतिक चिंताओं को प्रभावी रूप से प्रबंधित करना आवश्यक होगा, ताकि सभी भागीदार देशों के हितों को संतुलित किया जा सके और राजनीतिक संवेदनशीलता का समाधान किया जा सके।

7. दोषी राजनेताओं पर आजीवन प्रतिबंध

समाचार: सुप्रीम कोर्ट चुनाव लड़ने से दोषियों पर आजीवन प्रतिबंध लगाने की याचिकाओं की समीक्षा कर रहा है।

वर्तमान कानून: जन प्रतिनिधित्व अधिनियम (RP Act), 1951:
- 2+ साल की सजा पाने वाले दोषियों को रिहाई के बाद छह वर्षों के लिए अयोग्य घोषित किया जाता है।
- गंभीर अपराधों (जैसे बलात्कार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद) में दोषी ठहराए गए व्यक्तियों को तत्काल अयोग्य घोषित किया जाता है।

राजनीति का अपराधीकरण: ADR रिपोर्ट (2024):
- 46% सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें से 31% पर गंभीर आरोप हैं।
- अपराधी प्रत्याशियों की जीत दर 15.4% है, जबकि स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवारों की 4.4% ही है।

आजीवन प्रतिबंध के पक्ष में तर्क:
- राजनीति में नैतिकता और जनता का विश्वास बना रहता है।
- अपराधी सत्ता का दुरुपयोग और कानूनों को प्रभावित नहीं कर सकते।
- सामाजिक न्याय और सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

आजीवन प्रतिबंध के विरोध में तर्क:
- दोषियों के लोकतांत्रिक अधिकार सुरक्षित रहने चाहिए और उन्हें सुधारने का अवसर मिलना चाहिए।
- अगर कानूनी स्थिति बदलती है, तो प्रतिबंध अन्यायपूर्ण हो सकता है।
- इससे मतदाताओं की पसंद सीमित हो सकती है और राज्य का अधिक हस्तक्षेप हो सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व फैसले:
- ADR मामला (2002): उम्मीदवारों को अपने आपराधिक रिकॉर्ड का खुलासा करने के लिए अनिवार्य किया गया।
- लिली थॉमस मामला (2013): सजा पाने वाले विधायकों को तत्काल अयोग्य ठहराने का प्रावधान लागू किया।

आगे की राह:
- कानूनी सुधार: चुनावी कानूनों में संशोधन कर गंभीर अपराधियों को चुनाव लड़ने से रोकना।
- तेजी से न्याय: राजनेताओं के मामलों की फास्ट-ट्रैक अदालतों में सुनवाई कर देरी से बचना।
- मतदाता जागरूकता: अपराधी उम्मीदवारों को वोट न देने के लिए नागरिकों को शिक्षित करना।
- राजनीतिक जवाबदेही: दागी उम्मीदवारों को टिकट न देने और आंतरिक नैतिक संहिताओं को लागू करने के लिए दलों को बाध्य करना।

निष्कर्ष: विभिन्न आयोगों और चुनाव आयोग (EC) ने सख्त कानूनों की सिफारिश की है, लेकिन राजनीतिक सहमति अभी भी अधूरी है।

8. चीन की बांध परियोजना से जुड़ी चिंताएँ

समाचार: चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी (तिब्बत में यारलुंग त्सांगपो) पर दुनिया के सबसे बड़े जलविद्युत बांध के निर्माण की योजना ने भारत और बांग्लादेश जैसे निचले प्रवाह वाले देशों में गंभीर चिंताएँ बढ़ा दी हैं।

चीन की मेगा-बांध परियोजना
- क्षमता: 60 GW (14वीं पंचवर्षीय योजना, 2021-2025); चीन के मौजूदा थ्री गॉर्जेस डैम की तुलना में तीन गुना अधिक।
- उद्देश्य: जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना और 2060 तक कार्बन तटस्थता हासिल करना।
- लागत: लगभग $137 बिलियन।
- स्थान: मेडोग काउंटी, तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र में, जहां ब्रह्मपुत्र नदी एक बड़ा मोड़ लेकर यू-टर्न बनाती है।

यारलुंग त्सांगपो (ज़ांगबो) नदी
- तिब्बत में उत्पन्न होती है और अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने पर इसे सियांग कहा जाता है।
- असम में, यह दिबांग और लोहित नदियों से मिलकर ब्रह्मपुत्र बनती है।
- इसके बाद यह बांग्लादेश में प्रवेश कर बंगाल की खाड़ी में मिलती है।
- मुख्य नदी भूटान से नहीं गुजरती, लेकिन देश का 96% हिस्सा इसके जलग्रहण क्षेत्र में आता है।

बांध परियोजना के प्रभाव

पर्यावरणीय और पारिस्थितिक चिंताएँ
- गाद प्रवाह में कमी: चीनी बांध तलछट को रोकते हैं, जिससे भारत और बांग्लादेश में मिट्टी की उर्वरता घटती है।
- फ्लैश फ्लड जोखिम: अचानक पानी छोड़े जाने से असम और अरुणाचल प्रदेश में विनाशकारी बाढ़ आ सकती है।
- जैव विविधता पर खतरा: नदी पारिस्थितिकी को बाधित करता है और गंगा डॉल्फिन जैसी प्रजातियों के अस्तित्व को खतरे में डालता है।
- जलवायु और भूकंपीय जोखिम: हिमालय के भूकंप-प्रवण क्षेत्र में स्थित यह बांध भूस्खलन और पारिस्थितिकीय क्षति को बढ़ा सकता है।

भू-राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव
- भारत की जल सुरक्षा पर खतरा: चीन के ब्रह्मपुत्र पर नियंत्रण से जल प्रवाह रोकने या कृत्रिम बाढ़ लाने की आशंका बढ़ जाती है।
- कानूनी बाधाएँ: चीन अंतरराष्ट्रीय जल-साझाकरण कानूनों से बाध्य नहीं है, जिससे राजनयिक समाधान सीमित हैं।
- क्षेत्रीय संघर्ष: दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों को मेकोंग नदी पर चीन के अपस्ट्रीम बांधों से समान समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
- विस्थापन और खाद्य सुरक्षा: जल प्रवाह में बदलाव से सिंचाई, मत्स्य पालन और स्थानीय आजीविका प्रभावित हो सकती है।

आगे की राह
- जल संरचना को मजबूत करना: भारत को अरुणाचल प्रदेश में अपने बांध और जलविद्युत परियोजनाओं में तेजी लानी चाहिए।
- राजनयिक संवाद: बांग्लादेश और क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर सामूहिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- उन्नत निगरानी प्रणाली: चीनी बांधों पर निगरानी बढ़ाने के लिए उपग्रह और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली विकसित करनी चाहिए।
- कानूनी और रणनीतिक उपाय: क्षेत्रीय जल-साझाकरण समझौतों की वकालत करनी चाहिए और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के रास्ते तलाशने चाहिए।

9. न्यायिक अतिक्रमण: कार्यकारी नियुक्तियों में CJI की भूमिका

समाचार: हाल ही में, भारत के उपराष्ट्रपति ने न्यायिक अतिक्रमण पर गंभीर चिंताएँ व्यक्त कीं, विशेष रूप से कार्यकारी नियुक्तियों में भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) की भूमिका पर सवाल उठाया।

भारत में न्यायिक अतिक्रमण को समझना
- न्यायिक अतिक्रमण न्यायिक सक्रियता का एक चरम रूप है, जहाँ न्यायपालिका के मनमाने और बार-बार होने वाले हस्तक्षेप विधायिका या कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में दखल देते हैं।
- यह तब होता है जब न्यायालय अपनी संवैधानिक भूमिका से आगे बढ़कर नीतिगत निर्णय या कानून बनाने लगता है, जो कि विधायिका का विशेषाधिकार है।
- भारत का लोकतांत्रिक ढाँचा "जाँच और संतुलन" की प्रणाली सुनिश्चित करता है, जिसमें विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं।
- पूर्व मुख्य न्यायाधीशों, जैसे कि रंजन गोगोई और पी. सत्यशिवम, ने न्यायिक सक्रियता और अतिक्रमण के बीच महीन रेखा की ओर ध्यान दिलाया है और शासन में अत्यधिक न्यायिक हस्तक्षेप के खिलाफ चेतावनी दी है।
- अनुच्छेद 50 न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग रखने का प्रावधान करता है।

न्यायिक अतिक्रमण: प्रमुख उदाहरण और प्रभाव

महत्वपूर्ण मामले
- मद्रास हाईकोर्ट - 'वंदे मातरम्' (2017): स्कूलों और कार्यालयों में राष्ट्रगीत गाना अनिवार्य करने का आदेश, जिसे अनावश्यक हस्तक्षेप माना गया।
- सुप्रीम कोर्ट - राष्ट्रीय गान (2016): सिनेमाघरों में अनिवार्य रूप से राष्ट्रगान बजाने के आदेश को नीति-निर्माण में हस्तक्षेप माना गया।
- मद्रास हाईकोर्ट - आधार-सोशल मीडिया लिंकिंग (2019): निजता के उल्लंघन की आशंका के कारण आलोचना हुई।

कार्यकारी नियुक्तियों में हस्तक्षेप
- NJAC को रद्द करना (2015): सुप्रीम कोर्ट ने 99वें संविधान संशोधन को असंवैधानिक ठहराया और न्यायिक नियुक्तियों में अपनी प्रधानता बनाए रखी।
- प्रकाश सिंह केस (2006): सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस सुधार लागू करने का निर्देश दिया, जिससे कार्यपालिका का विवेक सीमित हुआ।
- CBI निदेशक आलोक वर्मा केस (2018): सुप्रीम कोर्ट ने कार्यपालिका के फैसले को चुनौती देते हुए वर्मा को बहाल कर दिया।

आधार	न्यायिक सक्रियता (Judicial Activism)	न्यायिक अतिक्रमण (Judicial Overreach)
परिभाषा	जब न्यायपालिका विधायिका या कार्यपालिका की निष्क्रियता पर संवैधानिक अधिकारों की रक्षा हेतु हस्तक्षेप करती है।	जब न्यायपालिका अपने अधिकार क्षेत्र से आगे बढ़कर नीति-निर्माण या कार्यपालिका के कार्यों में अत्यधिक दखल देती है।
संवैधानिकता	संविधान की भावना के अनुरूप कार्य करता है और नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करता है।	संविधान के शक्ति-विभाजन सिद्धांत (Separation of Powers) का उल्लंघन करता है।
न्यायालय की भूमिका	नागरिकों के अधिकारों की रक्षा और विधायिका/कार्यपालिका को जवाबदेह बनाना।	नीतिगत निर्णयों में सीधा हस्तक्षेप, जो विधायिका और कार्यपालिका का अधिकार क्षेत्र है।
उदाहरण	- विश्वनाथ केस (1973) - न्यायालय ने पर्यावरण संरक्षण पर आदेश दिया। - केशवानंद भारती केस (1973) - मूल संरचना सिद्धांत की व्याख्या।	- NJAC को रद्द करना (2015) - कार्यपालिका की नियुक्ति प्रक्रिया में हस्तक्षेप। - राष्ट्रीय गान अनिवार्य करना (2016) - न्यायालय द्वारा नीति-निर्माण।
सकारात्मक प्रभाव	- विधायिका और कार्यपालिका की जवाबदेही सुनिश्चित करता है। - आम नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है।	- संवैधानिक शक्तियों के बीच असंतुलन उत्पन्न करता है। - नीति निर्माण में न्यायपालिका का अनुचित दखल।
नकारात्मक प्रभाव	- कभी-कभी कार्यपालिका पर अनावश्यक दबाव बना सकता है।	- विधायिका और कार्यपालिका की स्वतंत्रता को बाधित करता है। - लोकतांत्रिक संतुलन को नुकसान पहुँचाता है।
निष्कर्ष	न्यायिक सक्रियता लोकतंत्र की रक्षा और नागरिकों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।	न्यायिक अतिक्रमण लोकतांत्रिक संतुलन को बिगाड़ सकता है और संविधान के शक्ति-विभाजन सिद्धांत को कमजोर कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय तुलना

- अमेरिका: न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है और सीनेट पुष्टि करती है, जिससे कार्यपालिका की निगरानी बनी रहती है।
- यूके: संसदीय सर्वोच्चता के कारण न्यायिक हस्तक्षेप सीमित है।
- फ्रांस और जर्मनी: न्यायपालिका की भूमिका कार्यकारी निर्णयों में बहुत सीमित होती है।

न्यायिक अतिक्रमण के प्रभाव

- अधिकारों का अतिक्रमण: अनुच्छेद 50 का उल्लंघन कर लोकतांत्रिक संतुलन को प्रभावित करता है।
- नीतिगत अक्षमताएँ: न्यायालय द्वारा बनाई गई नीतियाँ व्यावहारिक रूप से प्रभावी नहीं हो सकतीं।
- सरकार और न्यायपालिका के बीच तनाव: कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच टकराव बढ़ता है।

आगे की राह

- न्यायिक जवाबदेही विधेयक: न्यायपालिका की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाने की आवश्यकता।
- कोलेजियम सुधार: नियुक्तियों में कार्यपालिका की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- न्यायिक आत्म-संयम: न्यायालयों को प्रत्यक्ष नीतिगत निर्णयों से बचना चाहिए।
- निष्कर्ष: न्यायिक अतिक्रमण कभी-कभी भले ही लोकहित में हो, लेकिन इससे शासन में असंतुलन आ सकता है। लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

10. संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा USAID पर रोक

संदर्भ: अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (USAID) को बंद करने की दिशा में कदम उठाए हैं।

USAID क्या है?

- यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (USAID) अमेरिकी सरकार की एक स्वतंत्र एजेंसी है, जिसे 1961 में राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी द्वारा स्थापित किया गया था।
- इस एजेंसी को विभिन्न विदेशी सहायता कार्यक्रमों को एकीकृत करने और नागरिक विदेशी सहायता एवं विकास सहायता का प्रबंधन करने के लिए बनाया गया था।
- USAID को अमेरिकी संघीय बजट से धन प्राप्त होता है।
- USAID के शीर्ष प्राप्तकर्ता देशों में यूक्रेन, इथियोपिया, जॉर्डन, सोमालिया आदि शामिल हैं।

USAID के उद्देश्य और कार्यक्षेत्र: यह 100 से अधिक देशों में संचालित होती है और निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में वित्तीय सहायता एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करती है:

- **आर्थिक विकास**
- **स्वास्थ्य और शिक्षा**
- **खाद्य सुरक्षा और मानवीय सहायता**
- **जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण**
- **लोकतंत्र और शासन सुधार**

- USAID सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों (NGOs), व्यवसायों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर अनुदान और विकास परियोजनाओं के लिए सहायता प्रदान करती है।
- **कुछ प्रमुख पहलें शामिल हैं:**
  - राष्ट्रपति की आपातकालीन एड्स राहत योजना (PEPFAR): एचआईवी/एड्स के उपचार और रोकथाम पर केंद्रित।
  - फीड द फ्यूचर (Feed the Future): भूख और खाद्य सुरक्षा समस्याओं से निपटने के लिए।
  - पावर अफ्रीका (Power Africa): अफ्रीका में बिजली पहुंच का विस्तार करने हेतु।
  - वॉटर फॉर द वर्ल्ड एक्ट (Water for the World Act): जल, स्वच्छता और स्वच्छता सेवाओं को सुधारने के लिए।

USAID पर रोक के प्रभाव

- अमेरिकी वैश्विक प्रभाव पर असर: विदेशी सहायता ने अमेरिका को विकासशील देशों में चीन और रूस जैसे भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों का सामना करने और गठबंधन बनाने में मदद की है। USAID पर रोक अमेरिका की रणनीतिक पकड़ को कमजोर कर सकती है।
- विकासशील देशों के लिए वैकल्पिक भागीदारों का उदय: चीन जैसे देश, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसी योजनाओं के माध्यम से इस सहायता शून्य को भर सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव बढ़ सकता है।
- मानवीय संकट: कई कमजोर राष्ट्र शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे से संबंधित विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं।

भारत में USAID की भूमिका

- USAID की भारत में भागीदारी 1951 में शुरू हुई थी, जब राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने इंडिया इमरजेंसी फूड एड एक्ट पर हस्ताक्षर किए थे।
- हालांकि, भारत की USAID पर निर्भरता कम होने के कारण इस फंडिंग रोक का भारत पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- फिर भी, यह स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े कुछ मौजूदा परियोजनाओं को प्रभावित कर सकता है।
- 2024 में, USAID ने भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए $79.3 मिलियन आवंटित किए थे।

निष्कर्ष

- अमेरिकी सरकार द्वारा USAID फंडिंग पर रोक लगाने से वैश्विक विकास प्रयासों पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा।
- भारत को इस फैसले से अधिक नुकसान नहीं होगा, लेकिन कई विकासशील राष्ट्र जो अमेरिकी सहायता पर निर्भर हैं, वे गंभीर चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।
- यह कदम यह दर्शाता है कि राष्ट्रों को विकास सहायता और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक रणनीतियों की तलाश करनी चाहिए।

समाचार संक्षिप्त में

ला नीना और वैश्विक तापमान वृद्धि

समाचार: ला नीना चरण के आगमन के बावजूद, वैश्विक औसत सतह वायु तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर गया।

ला नीना क्या है?

- स्पेनिश में "ला नीना" का अर्थ है "छोटी लड़की"। इसे एल विएजो, एंटी-एल नीनो, या "कोल्ड इवेंट" भी कहा जाता है।
- इस स्थिति में व्यापारिक हवाएँ (Trade Winds) सामान्य से अधिक मजबूत हो जाती हैं, जिससे गर्म पानी इंडोनेशियाई तट की ओर धकेला जाता है और पूर्वी प्रशांत महासागर सामान्य से ठंडा हो जाता है।

मौसम पैटर्न पर प्रभाव

- उत्तर अमेरिका में अमेरिका और कनाडा में सर्दियाँ अधिक ठंडी होती हैं। दक्षिणी अमेरिका जैसे दक्षिण-पश्चिमी राज्य में शुष्क और गर्म स्थिति देखी जाती है।
- दक्षिण अमेरिका में पेरू और इक्वाडोर में सूखा पड़ सकता है। ब्राजील में अधिक बारिश होने की संभावना रहती है।
- एशिया और ओशिनिया में इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में अधिक बारिश और बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है।

भारत पर प्रभाव

- अधिकांश क्षेत्रों में अधिक वर्षा, जिससे मानसून मजबूत होता है।
- कई हिस्सों में बाढ़ और जलभराव का खतरा बढ़ता है।
- मानसून के बाद और सर्दियों के महीनों में तापमान सामान्य से कम रह सकता है।
- हिंद महासागर में अधिक चक्रवात बन सकते हैं, जिससे तटीय क्षेत्रों पर खतरा बढ़ सकता है।
- अत्यधिक वर्षा और बाढ़ के कारण कृषि पर नकारात्मक प्रभाव, जिससे फसलों की कटाई में देरी हो सकती है।

एल नीनो क्या है?

- "एल नीनो" का अर्थ है "छोटा लड़का"। यह ला नीना के विपरीत स्थिति है, जिसमें प्रशांत महासागर के पूर्वी भाग में समुद्री सतह का तापमान सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है।
- इससे भारत में कमजोर मानसून, सूखा, और तापमान में वृद्धि देखी जाती है, जबकि दक्षिण अमेरिका में अधिक वर्षा और बाढ़ की संभावना रहती है।

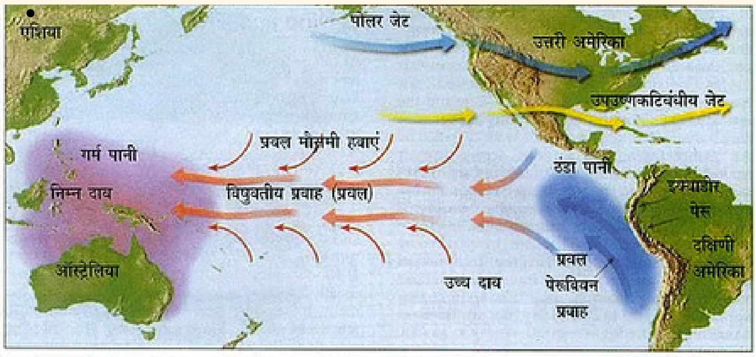

आमतौर से पछुआ हवाएं और प्रबल विषुवतीय प्रवाह पश्चिम की ओर बहता है। उसी समय तीव्र पेरूवियन प्रवाह के कारण ठंडा पानी दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तट के सहारे ऊपर को उमड़ने लगता है।

बॉम्बे' रक्त समूह

समाचार: भारत में एक दुर्लभ और जटिल चिकित्सा प्रक्रिया के तहत, 'बॉम्बे' (hh) रक्त समूह वाली 30 वर्षीय महिला का सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण किया गया।

'बॉम्बे' रक्त समूह के बारे में

- यह दुनिया के सबसे दुर्लभ रक्त समूहों में से एक है और इसे 1952 में मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे), भारत में डॉ. वाई.एम. भेंडे द्वारा खोजा गया था।
- बॉम्बे रक्त समूह (hh फेनोटाइप) में, व्यक्तियों में H एंटीजन पूरी तरह से अनुपस्थित होता है। इसका अर्थ है कि वे किसी भी ABO समूह (A, B, AB या O) से रक्त नहीं ले सकते।
- अधिकांश रक्त समूह (A, B, AB और O) H एंटीजन की उपस्थिति पर निर्भर करते हैं, जो ABO प्रणाली का आधार बनाता है।
- यह रक्त समूह भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश और कुछ मध्य पूर्वी क्षेत्रों में अधिक सामान्य रूप से पाया जाता है, जो आनुवंशिक विरासत पैटर्न के कारण होता है।

रक्त संक्रमण (Blood Transfusion):

- इस रक्त समूह वाले लोग किसी भी ABO समूह को रक्त दान कर सकते हैं।
- लेकिन वे केवल किसी अन्य बॉम्बे रक्त समूह वाले व्यक्ति से ही रक्त प्राप्त कर सकते हैं।

BLOOD GROUPS

	Type A	Type B	Type AB	Type O	Type Bombay O
Antigen (on RBC)	Antigen A	Antigen B	Antigen A + B	Antigen H	No Antigen
Antibody (in plasma)	Anti-B Antibody	Anti-A Antibody	Neither Antibody	Anti-A & Anti-B	Anti-A, Anti-B and Anti-H
Cannot donate	O, B, Bombay O	O, A, Bombay O	O, A, B, Bombay O	Bombay O	
Can donate	A, AB	B, AB	AB	O, A, B, AB	O, A, B, AB Bombay O
Can receive	A, O	B, O	AB, A, B, O	O	Bombay O

तरलता कवरेज अनुपात (LCR)

समाचार में क्यों?

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने संशोधित तरलता कवरेज अनुपात (LCR) मानदंडों के कार्यान्वयन को स्थगित करने का निर्णय लिया है।

तरलता कवरेज अनुपात (LCR) क्या है?

- LCR का उद्देश्य बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता बढ़ाना है, जिससे यह सुनिश्चित हो कि बैंक गंभीर तरलता संकट की 30-दिन की अवधि के दौरान पर्याप्त तरल संपत्तियाँ (Liquid Assets) रख सकें।
- यह बेसल III ढांचे के तहत एक प्रमुख नियामक आवश्यकता है, जिसे यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि बैंक उच्च-गुणवत्ता वाली तरल संपत्तियाँ (High-Quality Liquid Assets - HQLA) बनाए रखें।

बेसल III आवश्यकताएँ:

- बैंकिंग पर्यवेक्षण के लिए बेसल समिति (Basel Committee on Banking Supervision - BCBS) ने 2010 में LCR को पेश किया था।
- 2008 की वित्तीय संकट के बाद, बैंकों की तरलता जोखिम प्रबंधन को सुधारने के लिए इसे लागू किया गया था।

पृथ्वी के भीतरी कोर में संरचनात्मक परिवर्तन

समाचार में क्यों: नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित हालिया अध्ययन के अनुसार, पृथ्वी के भीतरी कोर में संरचनात्मक परिवर्तन हो रहे हैं।

अध्ययन के बारे में

- वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की आंतरिक परतों की जांच के लिए भूकंप से उत्पन्न होने वाली सिस्मिक वेव्स का उपयोग किया।
- ये तरंगें पृथ्वी की आंतरिक संरचना को समझने में मदद करती हैं, जैसे कि सीटी स्कैन मानव शरीर के लिए करता है।

मुख्य निष्कर्ष

- पहले यह माना जाता था कि पृथ्वी का भीतरी कोर ठोस और कठोर है, लेकिन नए अध्ययन के अनुसार, इसका ऊपरी हिस्सा अपेक्षाकृत नरम हो सकता है।
- बाहरी तरल कोर की अशांत गतिविधि आंतरिक कोर को प्रभावित कर रही है, जिससे इसकी घूर्णन गति और पृथ्वी के दिन की लंबाई पर असर पड़ सकता है।
- पहले यह माना जाता था कि भीतरी कोर स्वतंत्र रूप से घूमता है, लेकिन नया अध्ययन बताता है कि इसकी गति अब धीमी हो रही है।

पृथ्वी की परतें

- क्रस्ट – सबसे बाहरी और पतली परत, जिसकी मोटाई 5 से 35 किमी तक होती है। यह महाद्वीपों पर सिलिका और एल्युमिना तथा महासागरों में सिलिका और मैग्नीशियम से बनी होती है।
- मैंटल – 2,900 किमी तक फैला हुआ होता है। इसमें अर्ध-द्रव अस्थिनोस्फियर होता है, जो मैग्मा का स्रोत है। लिथोस्फियर क्रस्ट और ऊपरी मैंटल से मिलकर बनता है।
- कोर – 2,900 किमी की गहराई से शुरू होता है और मुख्य रूप से निकेल और आयरन से बना होता है। इसका बाहरी भाग तरल और भीतरी भाग ठोस तथा अत्यधिक दबाव में होता है।

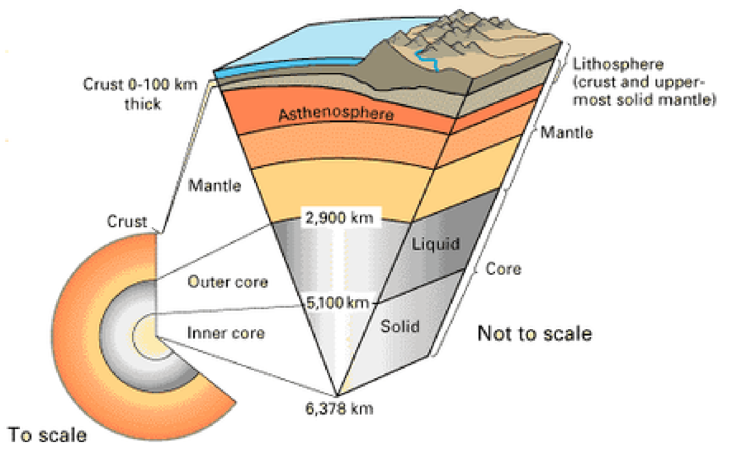

पराली जलाने को रोकने के लिए संसदीय समिति की सिफारिशें

समाचार में क्यों: एक संसदीय समिति ने पराली जलाने को हतोत्साहित करने के लिए न्यूनतम मूल्य तंत्र लागू करने की सिफारिश की है, जो फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की तरह होगा।

पराली जलाने की समस्याएं

- गंभीर वायु प्रदूषण, स्मॉग, श्वसन संबंधी रोग और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को बढ़ाता है।
- मिट्टी की उर्वरता को नुकसान पहुंचाता है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता बढ़ाता है।

संसदीय समिति की सिफारिशें

- किसान पराली क्यों जलाते हैं
  - समय की कमी और वैकल्पिक विधियों की अधिक लागत के कारण किसान पराली जलाने को मजबूर होते हैं।
  - धान के भूसे के लिए निश्चित बाजार मूल्य न होने से यह आर्थिक रूप से लाभदायक नहीं होता।
- मुख्य सिफारिशें
  - धान अवशेष के लिए न्यूनतम मूल्य – किसानों के संग्रहण खर्च को पूरा करने के लिए वार्षिक न्यूनतम मूल्य निर्धारित किया जाए।
  - सब्सिडी – किसानों को हैप्पी सीडर जैसी मशीनरी के लिए सब्सिडी दी जाए, ताकि वे पराली प्रबंधन कर सकें।
  - कम अवधि वाली फसलें – राज्य सरकारों को अल्प-अवधि की धान किस्मों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
  - राष्ट्रीय जैव ऊर्जा नीति – कृषि अवशेषों को जैव ऊर्जा उत्पादन में शामिल किया जाए।
  - अन्य उपाय – फसल अवशेष प्रबंधन लागत के लिए सहायता, वित्तीय प्रोत्साहन और जागरूकता अभियान चलाए जाएं।

आयकर विधेयक, 2025

समाचार: सरकार ने 60 साल पुराने आयकर अधिनियम, 1961 को निरस्त कर इसे एक सरल और अधिक कुशल कर ढांचे के साथ प्रतिस्थापित करने के लिए एक नया विधेयक प्रस्तावित किया है।

मुख्य विशेषताएँ

- सरल भाषा: कानूनी पाठ को अधिक समझने योग्य बनाया गया है।
- समेकन: बिखरी हुई और अप्रचलित प्रावधानों को हटाकर सुधार किया गया है।
- क्रिप्टो को संपत्ति के रूप में मान्यता: वर्चुअल संपत्तियाँ, जैसे कि क्रिप्टोकरेंसी, पूंजीगत संपत्ति के रूप में वर्गीकृत की जाएंगी।
- विवाद समाधान: विवाद समाधान और निर्णय प्रक्रिया के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश।
- पूंजीगत लाभ छूट: धारा 54E को हटाया गया, जिससे अप्रैल 1992 से पहले के पूंजीगत लाभ पर छूट समाप्त हो जाएगी।
- कर वर्ष: कर वर्ष को 1 अप्रैल से शुरू होने वाली 12 महीने की अवधि के रूप में परिभाषित किया गया है।

निष्कर्ष: विधेयक को संसदीय वित्त स्थायी समिति द्वारा समीक्षा के बाद अनुमोदित किया जाएगा और अप्रैल 2026 से प्रभावी होगा।
आयकर विधेयक, 2025

ग्रामीण भारत में प्रोटीन की कमी: प्रमुख निष्कर्ष

समाचार: आईसीआरआईएसएटी (ICRISAT) के एक अध्ययन से पता चला है कि प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ उपलब्ध होने के बावजूद ग्रामीण भारत में प्रोटीन की व्यापक कमी बनी हुई है।

मुख्य निष्कर्ष:

- अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में दो-तिहाई से अधिक घरों में प्रोटीन की खपत अनुशंसित मात्रा से कम है।
- आहार मुख्य रूप से चावल और गेहूं पर निर्भर करता है, जो दैनिक प्रोटीन का 60-75% योगदान करते हैं।
- दालें, डेयरी उत्पाद, अंडे और मांस जैसे प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ सांस्कृतिक प्राथमिकताओं, पोषण संबंधी जागरूकता की कमी और वित्तीय बाधाओं के कारण कम उपयोग किए जाते हैं।
- संपन्न परिवार भी अनुशंसित प्रोटीन स्तर को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) कैलोरी की उपलब्धता बढ़ाती है, लेकिन अनाज-प्रधान आहार को और मजबूत करती है।

सिफारिशें:

- खाद्य कार्यक्रमों में दालों, मिलेट्स और प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की मात्रा बढ़ाई जाए।
- क्षेत्र-विशिष्ट रणनीतियों और पोषण शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
- किसानों को विविध पोषक तत्वों से भरपूर फसलों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

आईसीआरआईएसएटी के बारे में: आईसीआरआईएसएटी (ICRISAT) एक प्रमुख कृषि अनुसंधान संस्थान है, जो अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा पर कार्य करता है। इसकी स्थापना 1972 में हुई थी और इसका मुख्यालय भारत में स्थित है।

भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति रूपरेखा

समाचार: सरकार ने विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए एक पारदर्शी और पूर्वानुमेय FDI नीति रूपरेखा बनाई है।

FDI क्या है?

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) उन निवेशों को संदर्भित करता है जो विदेशी संस्थाएं किसी अन्य देश के व्यापारिक हितों में करती हैं, आमतौर पर स्वामित्व या नियंत्रण के रूप में। यह लॉटरी, जुआ, चिट फंड, रियल एस्टेट और तंबाकू निर्माण जैसे क्षेत्रों में प्रतिबंधित है।

FDI के मार्ग

- स्वचालित मार्ग: पूर्व-अनुमोदन की आवश्यकता नहीं; निर्माण और सॉफ्टवेयर जैसे क्षेत्र इसमें शामिल हैं।
- सरकारी अनुमोदन मार्ग: पूर्व-अनुमोदन आवश्यक; टेलीकॉम, मीडिया और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्र इसमें आते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- स्वचालित मार्ग: 90% FDI प्रवाह इसी मार्ग से होता है, जिससे विनियामक बाधाएँ कम होती हैं।
- क्षेत्रीय उदारीकरण: रक्षा, टेलीकॉम और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में नियमों में ढील।
- बीमा सुधार: कुछ शर्तों के तहत बीमा क्षेत्र की सीमा 74% से बढ़ाकर 100% की गई।
- प्रतिस्पर्धात्मक संघवाद: राज्यों में व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र और लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देता है।

FDI का महत्व

- चालू खाता घाटे (Current Account Deficit) को कम करता है।
- मुद्रा स्थिरता और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को प्रोत्साहित करता है।
- उत्पादन, निर्यात और रोजगार को बढ़ावा देता है।

सरकारी पहलें

- रक्षा और बीमा में विदेशी निवेश सीमा में वृद्धि जैसी उदार FDI नीतियाँ।
- विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ।
- बेहतर कनेक्टिविटी के लिए बुनियादी ढाँचे और डिजिटल सुधार।

सकल घरेलू ज्ञान उत्पाद (GDKP)

समाचार: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने GDKP के मापन के लिए वैचारिक रूपरेखा पर चर्चा की।

GDKP क्या है?

प्रो. उंबर्टो सुलपासो और प्रो. जेफ कोल द्वारा प्रस्तावित, GDKP किसी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न और उपयोग किए गए ज्ञान को मापता है, जो GDP का पूरक है। यह आर्थिक विकास और संभावनाओं का आकलन चार स्तंभों पर करता है:

- ज्ञान तत्व (Ki): सांस्कृतिक और बौद्धिक योगदान की पहचान।
- ज्ञान उत्पादन मैट्रिक्स (CKPM): विभिन्न क्षेत्रों द्वारा उत्पन्न ज्ञान का मूल्यांकन।
- ज्ञान उपयोगकर्ता मैट्रिक्स (CKUM): समाज में ज्ञान की मांग को मापना।
- शिक्षा लागत: सरकार के बजट निर्णयों में सहायक।

महत्व

- GDKP का उद्देश्य ज्ञान, नवाचार और बौद्धिक संपत्तियों के प्रभाव को मात्रात्मक रूप से मापना है, जिससे अनुसंधान और प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित भारत की विकास प्रक्रिया को व्यापक दृष्टिकोण मिल सके।

संत गुरु रविदास

समाचार: पीएम मोदी ने संत गुरु रविदास को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिचय: गुरु रविदास 15वीं-16वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन के संत थे, जिन्होंने एकता, भक्ति और मानवता की सेवा का संदेश दिया। वे संत कबीर के शिष्य थे और रविदासिया धर्म के संस्थापक माने जाते हैं।

जीवन और शिक्षाएँ

गुरु रविदास ने जाति-भेद के खिलाफ संघर्ष किया और समानता, प्रेम और भाईचारे का प्रचार किया। उनके 'कर्म' के संदेश को "मन चंगा तो कठौती में गंगा" से व्यक्त किया जाता है, जिसका अर्थ है कि यदि मन पवित्र है, तो गंगा जल वहीं मौजूद है।

विरासत

उनके भक्ति पद गुरु ग्रंथ साहिब और पंचवाणी ग्रंथ में शामिल हैं। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने भारतीय संविधान के सिद्धांतों में गुरु रविदास के मूल्यों को सम्मिलित किया।

महर्षि दयानंद सरस्वती

समाचार: पीएम मोदी ने महर्षि दयानंद सरस्वती को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिचय

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात में हुआ था। उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सामाजिक सुधारों और शिक्षा को बढ़ावा देना था। उन्होंने सामाजिक असमानताओं और रूढ़िवादी परंपराओं को चुनौती दी।

मुख्य विचार

- मूर्तिपूजा और कर्मकांडों का विरोध किया।
- महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया और बाल विवाह तथा छुआछूत का विरोध किया।
- वैदिक सिद्धांतों, एकेश्वरवाद और सरल धार्मिक अनुष्ठानों को बढ़ावा दिया।

सामाजिक प्रभाव

- गौ संरक्षण का समर्थन किया, जिससे 1882 में गौरक्षिणी सभा की स्थापना हुई।
- डीएवी स्कूलों की स्थापना की, जहाँ शिक्षा को सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों के साथ जोड़ा गया।
- "स्वराज" (स्वशासन) का प्रचार किया, जिसे बाद में बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने अपनाया।

आर्य समाज का दर्शन

- जाति को जन्म से नहीं, बल्कि व्यक्ति की योग्यता के आधार पर मानने की वकालत की।
- उनके विचारों ने भारत की नई शिक्षा नीति 2020 को भी प्रभावित किया।

दक्षिण चीन सागर में डीपवॉटर 'स्पेस स्टेशन'

समाचार: चीन ने दक्षिण चीन सागर में एक डीपवॉटर अनुसंधान केंद्र के निर्माण को मंजूरी दी है, जो 2030 तक संचालित होगा।

परिचय

- यह एक कोल्ड सीप इकोसिस्टम रिसर्च स्टेशन होगा, जो समुद्र की सतह से 2,000 मीटर नीचे स्थित होगा।
- यह दुनिया के सबसे गहरे और उन्नत पानी के भीतर अनुसंधान केंद्रों में से एक होगा।

दक्षिण चीन सागर

- यह एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है, जो प्रशांत महासागर और हिंद महासागर को जोड़ता है।
- यह तेल, गैस और मछली संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र है।
- इसके चारों ओर चीन, ताइवान, फिलीपींस, मलेशिया, वियतनाम जैसे देश स्थित हैं।

विवाद

- चीन के क्षेत्रीय दावे एशियाई देशों के साथ टकराते हैं, जिससे द्वीपों और संसाधनों पर विवाद बना हुआ है।
- यह नौवहन और वायु यातायात को भी प्रभावित करता है।

भारत की स्थिति

- भारत फिलीपींस और वियतनाम जैसे दावेदार देशों का समर्थन करता है।
- भारत ऊर्जा संसाधनों की सुरक्षा और लुक ईस्ट नीति के तहत इन देशों के साथ संबंध मजबूत करना चाहता है।

आइंस्टाइन रिंग की खोज

समाचार: यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) के Euclid स्पेस टेलीस्कोप ने एक आइंस्टाइन रिंग की खोज की है, जो एक आकाशगंगा के चारों ओर 590 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर स्थित है।

आइंस्टाइन रिंग क्या है?

- यह एक गोलाकार प्रकाश संरचना होती है, जो गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग के कारण बनती है।
- जब कोई विशाल द्रव्यमान वाला पिंड उसके पीछे स्थित किसी दूरस्थ वस्तु से आने वाले प्रकाश को मोड़ता है, तब यह प्रभाव दिखाई देता है।
- यह आइंस्टाइन के सामान्य सापेक्षता सिद्धांत पर आधारित है।

महत्त्व

- डार्क मैटर का अध्ययन: आइंस्टाइन रिंग उन गुरुत्वीय प्रभावों का पता लगाने में मदद करती है, जो डार्क मैटर के कारण होते हैं, क्योंकि यह स्वयं प्रकाश उत्सर्जित नहीं करता।
- दूरस्थ आकाशगंगाओं का अवलोकन: यह उन आकाशगंगाओं को देखने की अनुमति देती है, जो बहुत धुंधली या दूरस्थ होती हैं।
- ब्रह्मांडीय विस्तार की जानकारी: प्रकाश के झुकाव का अध्ययन करके ब्रह्मांड के विस्तार से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

BrahMos NG (नेक्स्ट जनरेशन) मिसाइल

समाचार: BrahMos NG मिसाइल प्रणाली भारत की रक्षा क्षमता और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाती है।

BrahMos NG के बारे में

- यह भारत-रूस संयुक्त परियोजना है।
- इसकी मारक क्षमता 290 किमी और गति मैक 3.5 बनी हुई है, लेकिन यह अपने पूर्ववर्ती संस्करण की तुलना में हल्की (1.6 टन) और छोटी (6 मीटर) है।
- इसे सुखोई-30MKI और तेजस लड़ाकू विमान से दागा जा सकता है और इसमें स्वदेशी AESA रडार शामिल है।
- पहली परीक्षण उड़ान 2025-26 में होने की संभावना है।

रणनीतिक महत्त्व

- भारत ने 2024 में फिलीपींस को BrahMos मिसाइल की पहली खेप सौंपी, जिसकी $375 मिलियन की डील 2022 में हुई थी।
- इंडोनेशिया के साथ $450 मिलियन के सौदे के लिए उन्नत वार्ता चल रही है।
- अफ्रीका और पश्चिम एशिया के कई देशों ने BrahMos NG को हासिल करने में रुचि दिखाई है।

गंगासागर मेला 2025: व्यापक तैयारियों की घोषणा

समाचार: पश्चिम बंगाल सरकार ने गंगासागर मेला 2025 के लिए विस्तृत तैयारियों की घोषणा की है।

गंगासागर के बारे में

- सागर द्वीप बंगाल की खाड़ी के मुहाने पर स्थित है और कोलकाता से लगभग 120 किमी दूर है।
- यह सुंदरबन द्वीपसमूह का सबसे बड़ा द्वीप है।
- हर साल लाखों श्रद्धालु इस धार्मिक मेले में भाग लेने और गंगा और सागर के संगम में मकर संक्रांति के अवसर पर पवित्र स्नान करने के लिए यहां आते हैं।
- यह स्थान पवित्र माना जाता है और यहां कपिल मुनि मंदिर स्थित है।

मुक्त आवागमन व्यवस्था

संदर्भ: म्यांमार सीमा पर 22 क्रॉसिंग पॉइंट्स को नवीनीकृत मुक्त आवागमन व्यवस्था (FMR) के तहत चालू कर दिया गया है।

FMR के बारे में:

- FMR के तहत सीमा पर रहने वाले लोग बिना वीजा या पासपोर्ट के अपने रिश्तेदारों से मिलने जा सकते हैं।
- 1968 में शुरू की गई यह व्यवस्था पूर्वोत्तर भारत की अधिकतर खुली सीमा पर दोनों ओर के समुदायों के जातीय और पारिवारिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए लागू की गई थी।
- शुरुआत में यह सीमा 40 किमी थी, जिसे 2004 में 16 किमी और 2016 में 10 किमी कर दिया गया, साथ ही अतिरिक्त नियम जोड़े गए।
- बायोमेट्रिक सत्यापन के साथ सीमा पास जारी किए जाते हैं, और इन्हें एक केंद्रीकृत पोर्टल से जांचा जाता है।
- प्रारंभिक जांच असम राइफल्स द्वारा की जाती है, उसके बाद राज्य पुलिस द्वारा निवास स्थान पर आगे की जांच होती है।

स्थिति: हालांकि गृह मंत्री ने FMR को समाप्त करने की घोषणा की थी, लेकिन विदेश मंत्रालय (MEA) द्वारा अब तक कोई औपचारिक निलंबन आदेश जारी नहीं किया गया है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

भारत-म्यांमार सीमा निम्नलिखित राज्यों से होकर गुजरती है:

- अरुणाचल प्रदेश: 520 किमी
- नागालैंड: 215 किमी
- मणिपुर: 398 किमी
- मिजोरम: 510 किमी

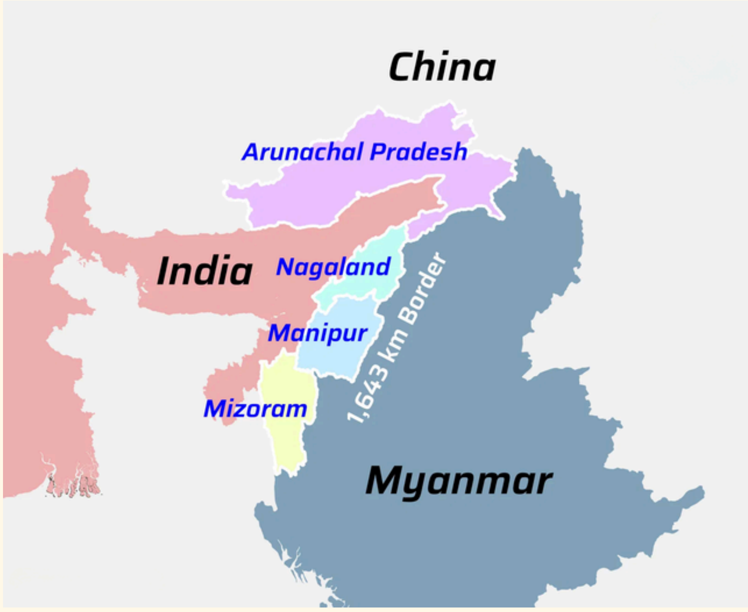

प्रारंभिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न

भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी के प्रमुख कारक क्या हैं?
a) साझा लोकतांत्रिक मूल्य और आर्थिक सहयोग
b) सैन्य गठबंधन और पारस्परिक रक्षा समझौते
c) सांस्कृतिक संबंध और पर्यटन
d) जलवायु परिवर्तन के सामान्य लक्ष्य

590 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर स्थित एक आकाशगंगा के चारों ओर आइंस्टीन रिंग की खोज किस अंतरिक्ष टेलीस्कोप ने की?
a) हबल स्पेस टेलीस्कोप
b) जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप
c) यूक्लिड स्पेस टेलीस्कोप
d) चंद्रा एक्स-रे ऑब्जर्वेटरी

ब्रह्मोस NG एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है, जिसे भारत और किस देश के संयुक्त उद्यम के तहत विकसित किया गया है?
a) रूस
b) संयुक्त राज्य अमेरिका
c) इज़राइल
d) फ्रांस

गंगासागर मेला भारत के किस राज्य में प्रतिवर्ष मनाया जाता है?
a) उत्तर प्रदेश
b) पश्चिम बंगाल
c) बिहार
d) ओडिशा

ला नीना का वैश्विक तापवृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) पर क्या प्रभाव पड़ता है?
a) यह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन बढ़ाकर वैश्विक तापवृद्धि को तेज करता है
b) यह प्रशांत महासागर की सतह के तापमान को अस्थायी रूप से ठंडा करता है, जिससे वैश्विक तापवृद्धि के कुछ प्रभावों में देरी हो सकती है
c) इसका वैश्विक तापमान पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता
d) यह वैश्विक तापवृद्धि के रुझानों को उलट देता है

IMEC परियोजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
a) भारत, यूरोप और मध्य पूर्व के बीच व्यापार और संपर्क को बढ़ाना
b) भारत और मध्य पूर्व के बीच सैन्य सहयोग को मजबूत करना
c) नवीकरणीय ऊर्जा में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना
d) भारत और यूरोप के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देना

कार्यपालिका नियुक्तियों पर न्यायिक अतिक्रमण (Judicial Overreach) के विरुद्ध क्या तर्क दिया जाता है?
a) यह न्यायपालिका की स्वतंत्रता को कमजोर करता है
b) इससे कार्यपालिका को न्यायपालिका पर अत्यधिक नियंत्रण मिल जाता है
c) यह शक्तियों के पृथक्करण (Separation of Powers) के सिद्धांत का उल्लंघन करता है
d) यह निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही को कम कर देता है

वार्षिक भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (Corruption Perceptions Index - CPI) किस संगठन द्वारा जारी किया जाता है?
a) संयुक्त राष्ट्र
b) विश्व बैंक
c) ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल
d) एमनेस्टी इंटरनेशनल

भारत और म्यांमार के बीच मुक्त आवाजाही व्यवस्था (Free Movement Regime - FMR) समझौते के तहत निवासी सीमा से कितनी दूरी तक स्वतंत्र रूप से यात्रा कर सकते हैं?
a) 16 किमी
b) 10 किमी
c) 5 किमी
d) 20 किमी

निम्नलिखित में से कौन सा देश भारतीय दवा उत्पादों (फार्मास्युटिकल्स) का सबसे बड़ा आयातक है?
a) संयुक्त राज्य अमेरिका
b) यूनाइटेड किंगडम
c) चीन
d) जर्मनी

चीन का गहरे समुद्र में स्थित 'अंतरिक्ष स्टेशन' किस वर्ष तक परिचालन में आने की उम्मीद है?
a) 2025
b) 2028
c) 2030
d) 2035

महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना किस वर्ष की थी?
a) 1857
b) 1875
c) 1890
d) 1901

तिब्बती पठार पर चीन की बांध परियोजना से कौन सी नदी प्रभावित हो रही है, जिससे निचले प्रवाह वाले देशों में चिंता बढ़ी है?
a) ब्रह्मपुत्र
b) गंगा
c) यांग्त्ज़ी
d) मेकोंग

भारत के चुनाव आयोग ने किस प्रकार के मामलों में दोषी ठहराए गए राजनेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की है?
a) भ्रष्टाचार से संबंधित मामले
b) आतंकवाद से संबंधित मामले
c) राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ
d) उपरोक्त सभी

बॉम्बे रक्त समूह (Bombay Blood Group) एक दुर्लभ रक्त समूह है, जो मुख्य रूप से किस जनसंख्या में पाया जाता है?
a) अफ्रीकी
b) एशियाई
c) यूरोपीय
d) लैटिन अमेरिकी

संत गुरु रविदास किस प्रसिद्ध संत के शिष्य थे?
a) संत कबीर
b) संत तुकाराम
c) गुरु नानक
d) संत एकनाथ

मणिपुर में जारी अशांति के कारण किस वर्ष राष्ट्रपति शासन लगाया गया था?
a) 2016
b) 2022
c) 2024
d) 2023

आइंस्टीन रिंग किस वैज्ञानिक घटना को दर्शाता है?
a) क्वांटम मैकेनिक्स
b) गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग
c) प्रकाश की गति
d) विद्युतचुंबकीय तरंगें

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, किस राज्य में सबसे अधिक प्रदर्शन में कमजोर सार्वजनिक विश्वविद्यालय हैं?
a) उत्तर प्रदेश
b) पश्चिम बंगाल
c) महाराष्ट्र
d) तमिलनाडु

भारत के साथ IMEC परियोजना में सहयोग करने वाला यूरोपीय देश कौन सा है?
a) जर्मनी
b) फ्रांस
c) यूनाइटेड किंगडम
d) इटली

मुक्त आवाजाही व्यवस्था (FMR) के तहत जारी किए गए सीमा पासों में कौन से सुरक्षा उपाय शामिल हैं?
a) बायोमेट्रिक सत्यापन
b) आधार कार्ड प्रमाणीकरण
c) पासपोर्ट और वीज़ा जांच
d) चेहरे की पहचान

भारत और अमेरिका के बीच रक्षा और सुरक्षा मामलों में सहयोग का मुख्य ढांचा कौन सा है?
a) रक्षा सहयोग समझौता (DCA)
b) लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA)
c) यूएस-इंडिया सिविल न्यूक्लियर डील
d) व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA)

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप कॉरिडोर (IMEC) परियोजना किस यूरोपीय देश के सहयोग से विकसित की जा रही है?
a) जर्मनी
b) फ्रांस
c) यूनाइटेड किंगडम
d) इटली

दक्षिण चीन सागर में चीन के डीपवाटर 'स्पेस स्टेशन' का मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य क्या है?
a) वैश्विक तापमान वृद्धि के प्रभावों का अध्ययन करना
b) कोल्ड सीप इकोसिस्टम का अवलोकन और अनुसंधान करना
c) क्षेत्र में भूकंपीय गतिविधियों की निगरानी करना
d) नई अंडरवाटर रक्षा प्रौद्योगिकियों का परीक्षण करना

दोषी ठहराए गए राजनेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
a) चुनावी प्रक्रिया की सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करना
b) दोषी व्यक्तियों की राजनीतिक भागीदारी को हतोत्साहित करना
c) राजनीतिक प्रणाली में भ्रष्टाचार के प्रसार को रोकना
d) एक स्वस्थ लोकतंत्र को बढ़ावा देना

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

1. **भारत के फार्मास्युटिकल निर्यात को संचालित करने वाले प्रमुख कारकों पर चर्चा करें और इस क्षेत्र को वैश्विक बाजार में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनका विश्लेषण करें। सरकार द्वारा फार्मास्युटिकल निर्यात की वृद्धि को बढ़ाने के लिए कौन-कौन से उपाय किए जा सकते हैं?**
2. **पिछले दो दशकों में भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी के विकास की समीक्षा करें। इस संबंध ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक सहयोग को कैसे प्रभावित किया है?**
3. **भारत में राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के प्रदर्शन पर नीति आयोग की रिपोर्ट का आलोचनात्मक विश्लेषण करें। उनकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता में सुधार के लिए रिपोर्ट द्वारा सुझाई गई प्रमुख सिफारिशें क्या हैं?**
4. **भारत में शासन मूल्यांकन में भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) के महत्व पर चर्चा करें। इस सूचकांक में भारत की स्थिति में सुधार करने और सार्वजनिक क्षेत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही को मजबूत करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जा सकते हैं?**
5. **मणिपुर में जारी अशांति के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करें। राष्ट्रपति शासन लागू होने से राज्य की राजनीतिक स्वायत्तता और शासन पर क्या प्रभाव पड़ता है?**
6. **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) एक महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजना है। भारत और फ्रांस के बीच इस सहयोग के रणनीतिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक महत्व पर चर्चा करें।**
7. **गंभीर अपराधों के लिए दोषी ठहराए गए राजनेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने के प्रभावों का मूल्यांकन करें। क्या आपको लगता है कि यह उपाय भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करेगा? उदाहरणों के साथ अपने उत्तर को उचित ठहराएं।**
8. **ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों पर चीन द्वारा बनाए जा रहे बांधों ने भारत सहित नीचे स्थित देशों में चिंता पैदा कर दी है। इन परियोजनाओं के संभावित पर्यावरणीय और भू-राजनीतिक परिणामों पर चर्चा करें।**
9. **मुख्य न्यायाधीश द्वारा कार्यकारी नियुक्तियों में हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि में न्यायिक अतिक्रमण की अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण करें। भारत में शक्ति पृथक्करण के लिए इसके क्या प्रभाव हैं?**
10. **ला नीना घटना की व्याख्या करें और इसका वैश्विक मौसम पैटर्न पर प्रभाव बताएं। यह वैश्विक तापमान वृद्धि की प्रक्रिया के साथ कैसे अंतःक्रिया करता है और जलवायु परिवर्तन पर इसके क्या प्रभाव हैं?**
11. **संत गुरु रविदास के जीवन और शिक्षाओं पर चर्चा करें। उनके संदेश ने उनके समय की सामाजिक असमानताओं को कैसे चुनौती दी, और आज के भारत में उनकी शिक्षाएँ कितनी प्रासंगिक हैं?**
12. **भारत में सामाजिक और शैक्षिक सुधारों को बढ़ावा देने में महर्षि दयानंद सरस्वती के योगदान का विश्लेषण करें। उनकी विचारधारा ने भारत के आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलनों को कैसे प्रभावित किया?**
13. **गंगासागर मेला भारत के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है। इस आयोजन के सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करें और इस तरह के बड़े पैमाने पर आयोजनों के सतत प्रबंधन के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?**
14. **भारत और म्यांमार के बीच मुक्त आवाजाही व्यवस्था (FMR) समझौते का मूल्यांकन करें। इसके लाभ और चुनौतियाँ क्या हैं, और इसे बेहतर सीमा प्रबंधन और जनता के बीच आपसी संपर्क को बढ़ाने के लिए कैसे मजबूत किया जा सकता है?**